International Journal of Arts, Humanities and Social Studies

**ISSN Print:** 2664-8652
**ISSN Online:** 2664-8660
**Impact Factor:** RJIF 8
IJAHSS 2023; 5(1): 139-141
www.socialstudiesjournal.com
Received: 07-03-2023
Accepted: 18-04-2023

**सरिता**
एसोसिएट, प्रोफेसर शिक्षा विभाग
अदिति महाविद्यालय, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

**Corresponding Author:**
**सरिता**
एसोसिएट, प्रोफेसर शिक्षा विभाग
अदिति महाविद्यालय, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

# अभिभावकों और बेटियों का एक–दूसरे के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

## सरिता

**DOI:** https://doi.org/10.33545/26648652.2023.v5.i1b.85

**सारांश**
यह अध्ययन ग्रामीण क्षेत्र में किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में जहां साक्षरता दर नगरों की तुलना में कम है, परंपरागत पितृसत्तात्मक समाज है, लिंग अनुपात में भी लड़कियों की संख्या लड़कों से बहुत कम है। हरियाणा राज्य में यह शोध अध्ययन किया गया है। इस शोध लेख के माध्यम से इस अध्ययन के उद्देश्यों, शोध विधि एवं निष्कर्षों को प्रस्तुत करने का प्रयास है। ग्रामीण, परंपरागत, पितृसत्तात्मक समाज में अभिभावकों का अपनी बेटियों के प्रति क्या दृष्टिकोण है, बेटियों का भी अपने अभिभावकों के प्रति क्या दृष्टिकोण है, इनको एक–दूसरे के प्रति दृष्टिकोणों का क्या प्रभाव बेटियों के जीवन, उनकी शिक्षा, सामाजिक समावेशन इत्यादि पर पड़ता है। इन प्रमुख प्रश्नों के साथ इस शोध के उद्देश्य को निर्धारित किया गया है तथा अभिभावकों एवं बेटियों से साक्षात्कार, अनौपचारिक बातचीत एवं अवलोकन द्वारा आंकड़े एकत्रित करके विश्लेषित किए गए, निष्कर्ष तक पहुंचा गया। अंत में इस संबंध में महत्त्वपूर्ण सुझाव भी दिए गए हैं।

**कूटशब्द :** अभिभावक, बेटियां, दृष्टिकोण, मान–मर्यादा

## प्रस्तावना
यह अध्ययन कुछ उद्देश्यों पर आधारित है जिनकी पृष्ठभूमि में कुछ प्रश्न रहे हैं। जैसे अभिभावक अपनी बेटियों की शिक्षा के प्रति क्या सोच रखते हैं, अभिभावकों की दृष्टि में बेटे एवं बेटी क्या समान हैं, भविष्य में अभिभावक अपनी बेटियों को किस मुकाम पर देखना चाहते हैं, एक अच्छी बेटी में वे क्या गुण देखते हैं, एक अच्छी बेटी कैसी होती है इत्यादि। दूसरी ओर बेटियां अपने अभिभावकों से क्या अपेक्षाएं करती हैं, उनकी अपने अभिभावकों के प्रति क्या सोच है, अच्छे अभिभावक कैसे होते हैं, उनकी शिक्षा के प्रति उनके अभिभावकों की क्या सोच है, क्या उनके अभिभावक उनके साथ समानता का व्यवहार करते हैं इत्यादि। इस प्रकार इन प्रमुख प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए उद्देश्यों का निर्माण किया गया। इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य अधोलिखित हैं–

- बेटियों के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- अभिभावकों के प्रति बेटियों के दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- बेटियों की शिक्षा के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- अच्छी बेटी के विषय में अभिभावकों के दृष्टिकोण का समालोचनात्मक अध्ययन करना।
- बेटियों की अभिभावकों से अपेक्षाओं का अध्ययन करना।

## अध्ययन का महत्त्व
यह अध्ययन हरियाणा प्रदेश की ग्रामीण पृष्ठभूमि में किया गया है। हरियाणा गांव बहुल प्रदेश है। यहां पितृसत्तात्मकता समाज में पाई जाती है। इस प्रदेश में जनसंख्या की दृष्टि से बेटियों की लड़कियों की संख्या लड़कों की तुलना में बहुत कम है। इनमें 6 वर्ष की आयु तक तो यह संख्या और भी कम है। ऐसी पृष्ठभूमि में अभिभावकों का अपनी बेटियों के प्रति दृष्टिकोण क्या है, इसे समझना महत्त्वपूर्ण बन जाता है और साथ ही साथ बेटियों के अपने अभिभावकों के प्रति क्या दृष्टिकोण हैं, इसको जानना भी महत्त्वपूर्ण है। अभी तक इस तरह के शोध नहीं हुए हैं। यह अछूता क्षेत्र रहा है। ग्रामीण अभिभावकों एवं उनकी बेटियों का एक–दूसरे के प्रति दृष्टिकोण को समझना अति महत्त्वपूर्ण है। इससे बेटियों के सामाजिक समावेशन के साथ–साथ उनके सषक्तीकरण में सहायता मिलेगी। यह अध्ययन नए परिप्रेक्ष्य को सामने लाने वाला है। इस अध्ययन की उपयोगिता नीति–निर्माताओं के साथ–साथ शिक्षाविदों के लिए भी है। समाज में व्याप्त दृष्टिकोण को समझ कर

उससे संबंधित शैक्षिक नीतियां, जागरूकता कार्यक्रम इत्यादि भी शुरू किए जा सकते हैं। अतः यह अध्ययन अति महत्त्वपूर्ण है।

## अध्ययन पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक पद्धति से किया गया है। इसमें साक्षात्कार, अवलोकन एवं अनौपचारिक बातचीत से आंकड़े एकत्रित किए गए हैं। ग्रामीण बालिकाओं (11–18 वर्ष), इन्हीं बालिकाओं के अभिभावकों से साक्षात्कार किए गए, बातचीत की गई और इसी दौरान अवलोकन भी किया गया। इन सभी से प्राप्त आंकड़ों को साझा किया गया एवं तदुपरांत गहनता से विश्लेषण के उपरांत निष्कर्ष निकाले गए।

## विश्लेषण एवं निष्कर्ष

इस अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष आगे प्रस्तुत किया गया है।

## अभिभावकों के प्रति बेटियों का दृष्टिकोण

अभिभावकों के प्रति बेटियों का दृष्टिकोण विविधतापूर्ण पाया गया। यह सकारात्मक तो पाया गया परंतु अभिभावकों के किसी विशेष पक्ष व गुण पर केंद्रित था। अभिभावकों के संबंध में बेटियों के दृष्टिकोण को आगे तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है –

| क्र.सं. | बेटियों की संख्या प्रतिशत में | अभिभावकों के गुण |
|---|---|---|
| 1. | 32 प्रतिशत | बेटियों को अभिप्रेरित करना |
| 2. | 12 प्रतिशत | मां का स्पोर्ट |
| 3. | 22 प्रतिशत | विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध कराना |
| 4. | 15 प्रतिशत | आत्मनिर्भर बनने के लिए बढ़ावा देना |
| 5. | 01 प्रतिशत | मान–सम्मान को बढ़ावा देना |
| 6. | 06 प्रतिशत | पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय देना |
| 7. | 12 प्रतिशत | स्पष्टता से कुछ न बता पाना |
| कुल | 100 प्रतिशत | |

बेटियों की अपने अभिभावकों के प्रति सोच व दृष्टिकोण सकारात्मक थी जिसमें 32 प्रतिशत बेटियों ने बताया कि उनके अभिभावक उन्हें मोटिवेट करते हैं, पढ़ने के लिए कहते हैं, कम नंबर लाने में उसे बेहतर करने को कहते हैं। 12 प्रतिशत बेटियों का दृष्टिकोण मां के प्रति विशेषकर बहुत ही ज्यादा सकारात्मक पाया गया। बेटियों का कहना था कि उनकी मां उन्हें पूरा सहयोग करती है एवं स्पोर्ट करती है। जब वे पढ़ रही होती हैं तो उनकी मां घरेलू कार्य नहीं कराती। इसी प्रकार बेटियां अपने अभिभावकों को विभिन्न सुविधाएं जिसमें पढ़ाई संबंधी प्रमुख हैं, उपलब्ध कराने का भी श्रेय देते हैं। 15 प्रतिशत बेटियों का कहना था कि उनके अभिभावकों की सोच उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की है। अभिभावक उन्हें जीवन में कामयाब देखना चाहते हैं। 16 प्रतिशत बेटियों का कहना था कि उनके अभिभावक उन्हें जीवन में ऊंचाइयों पर देखना चाहते हैं और उन्हें पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय देते हैं। इस संदर्भ में 12 प्रतिशत बेटियों ने स्पष्टता से कोई नजरिया अपने अभिभावकों के प्रति व्यक्त नहीं किया।

इस संबंध में आगे बेटियों का कहना था कि उनके अभिभावक उन्हें सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं, समय देते हैं, परंतु उन्हें उनके भाई के समान घर से बाहर नहीं जाने देते। बेटियों ने बताया कि वह प्रायः घर पर ही रहती हैं और उन्हें घर से बाहर जाने की आजादी नहीं है। उनके साथ उनके अभिभावकों का व्यवहार भेदभावपूर्ण है इस संबंध में। बेटियों का कहना था कि उन्हें अपने विषय में निर्णय लेने की आजादी नहीं है। उनके मन में घर से बाहर न जा पाने की कसक है। अभिभावकों ने लड़की होने के कारण उन पर बंदिशे लगाई हुई हैं।

## बेटियों की अभिभावकों से अपेक्षाएं

बेटियों की बहुत–सी अपेक्षाएं अपने अभिभावकों से हैं जिन्हें तालिका के माध्यम से आगे बताया गया है–

| क्र.सं. | बेटियों की संख्या प्रतिशत में | अभिभावकों से अपेक्षाएं |
|---|---|---|
| 1. | 33 प्रतिशत | सहयोग, स्पोर्ट एवं प्रोत्साहन |
| 2. | 26 प्रतिशत | मित्रता |
| 3. | 12 प्रतिशत | स्वतंत्रता और समानता |
| 4. | 10 प्रतिशत | घर का अच्छा माहौल |
| 5. | 09 प्रतिशत | जागरूकता |
| 6. | 05 प्रतिशत | कठोरता |
| 7. | 05 प्रतिशत | कोई प्रतिक्रिया नहीं |
| कुल | 100 प्रतिशत | |

आंकड़ों से स्पष्ट है कि बेटियां अपने अभिभावकों से सहयोग, स्पोर्ट एवं प्रोत्साहन के साथ अपने साथ मित्रता का और स्वतंत्रता एवं समानता का व्यवहार चाहती हैं। वे अपने लिए घर के अच्छे, पढ़ने लायक माहौल कि अभिभावकों से अपेक्षा करती हैं। बेटियां अपने अभिभावकों को अपने प्रति, अपनी शिक्षा के प्रति जागरूक देखना चाहती हैं। बेटियों का कहना था कि अभिभावकों को अपने बच्चों से लगाव होना चाहिए और उन्हें अपने बच्चों पर विश्वास होना चाहिए। 5 प्रतिशत बेटियों का यह भी कहना था कि अभिभावकों को कभी–कभी सख्ती भी करनी चाहिए।

बेटियों ने बताया कि अभिभावकों को अपने बच्चों के साथ प्यार से बोलना चाहिए, बेटियों पर गांव वालों के कहने से अभिभावकों को जल्दी शादी का दबाव नहीं डालना चाहिए।

## बेटियों की शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण

बेटियों की शिक्षा के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण को निम्न तालिका के द्वारा प्रस्तुत किया गया है –

| क्र. सं. | अभिभावकों की संख्या प्रतिशत में | अभिभावकों की प्रतिक्रियाएं |
|---|---|---|
| 1. | 50 प्रतिशत | विवाह के लिए आवश्यकता |
| 2. | 40 प्रतिशत | आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यकता |
| 3. | 10 प्रतिशत | जीवन में सफलता प्राप्त करने में आवश्यकता |
| कुल | 100 प्रतिशत | |

आंकड़ों से स्पष्ट है कि विवाह की दृष्टि से 50 प्रतिशत अभिभावक शिक्षा को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। ऐसे अभिभावकों का कहना था कि आजकल विवाह में भी पढ़ी–लिखी लड़की की मांग रहती है, पढ़ी–लिखी लड़की को अच्छा वर मिल जाता है। अभिभावकों की ऐसी सोच संकीर्ण है, उन्हें बेटी को आत्मनिर्भर एवं सशक्त करने हेतु शिक्षित करना चाहिए।

बेटियों को कौन–सा व्यवसाय करना चाहिए। इस संबंध में भी आंकड़ों को निम्न तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है –

| क्र.सं. | अभिभावकों की संख्या प्रतिशत में | बेटियों का व्यवसाय |
|---|---|---|
| 1. | 58 प्रतिशत | शिक्षण |
| 2. | 22 प्रतिशत | बेटी की इच्छा |
| 3. | 12 प्रतिशत | कोई भी सरकारी नौकरी |
| 4. | 08 प्रतिशत | डॉक्टर |
| कुल | 100 प्रतिशत | |

स्पष्ट है कि आधे से अधिक अभिभावक अपनी बेटियों को शिक्षिका बनाना चाहते हैं। इसके पीछे उनका कहना था कि यह केवल दिन की नौकरी होती है, घर के पास होती है और कम घंटों की होती है। अभिभावकों के अनुसार इस नौकरी में बेटियां घर–परिवार और नौकरी के बीच संतुलन आसानी से बना लेती है। मात्र 22 प्रतिशत अभिभावक बेटी की इच्छा को महत्त्व दे रहे

हैं। उनको बेटी की इच्छा को सर्वोपरि रूप से व्यवसाय चयन में महत्त्व देना चाहिए।

### अच्छी बेटी के विषय में अभिभावकों का दृष्टिकोण

इस संबंध में 100 प्रतिशत अभिभावकों का कहना था कि अच्छी बेटी घर–परिवार की इज्जत, मान–सम्मान, मान–मर्यादा को बढ़ाती है। यह इज्जत मान–मर्यादा बेटी के हाथ में होती है। अभिभावकों के अनुसार बेटी का चाल–चलन ठीक होना चाहिए, उसे अपने अभिभावकों की इच्छा से विवाह करना चाहिए, उसे कोई भी काम करने से पूर्व हमारी इज्जत के विषय में सोचना चाहिए। अभिभावकों का कहना था कि अच्छी बेटी सर्वगुण संपन्न होती है और उसमें सबसे पहले गुण उसके चरित्र का है। बेटी को चरित्रवान होना चाहिए। बेटी परिवार की ही नहीं गांव की भी इज्जत होती है, इसे बढ़ाना चाहिए बेटी को। अच्छी बेटी अभिभावकों के कहे अनुसार चलती है। अभिभावकों के निर्णय मानती है। एक अच्छी बेटी को अभिभावकों के अनुसार ज्यादा नहीं बोलना चाहिए उसे अपनी पढ़ाई से ही मतलब रखना चाहिए।

अतः स्पष्ट है कि अच्छी बेटी में सभी अभिभावक उसके चरित्रवान होने, उनकी इच्छा से विवाह करने के गुण को सर्वोपरि देख रहे हैं।

### बेटियों के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण

अध्ययन में पाया गया की बेटियों के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण एवं संकीर्ण था। अभिभावक बेटियों को शिक्षित तो करना चाहते थे परंतु उन्हें आजादी बेटों के समान नहीं देते थे। उनके साथ असमानता का व्यवहार होता है। पितृसत्तात्मक, सामाजिक व्यवस्था में घर–परिवार की मान–मर्यादा को भी अभिभावक बेटियों से ही जोड़कर देख रहे हैं, जो कि सही नहीं है। बेटियों के संबंध में निर्णय लेने में भी बेटियों को कोई अधिकार नहीं है। यह दृष्टिकोण सही नहीं है। अपनी बेटियों की रुचियों की जानकारी भी अधिकांश अभिभावकों को नहीं थी।

निम्न तालिका के माध्यम से अभिभावकों की बेटियों की रुचि संबंधी आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं –

| क्र.सं. | अभिभावकों की संख्या प्रतिशत में | बेटियों की रुचियां |
|---|---|---|
| 1. | 48 प्रतिशत | कोई प्रतिक्रिया नहीं |
| 2. | 28 प्रतिशत | पढ़ाई ही रुचि होनी चाहिए |
| 3. | 24 प्रतिशत | रुचियां को बढ़ावा देते हैं |
| कुल | 100 प्रतिशत | |

स्पष्ट है कि 48 प्रतिशत अभिभावकों ने बेटियों की रुचियां के संबंध में कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया नहीं दी। अधिकांश अभिभावकों का मानना था कि बेटियों को पढ़ाई ही करनी चाहिए और पढ़ाई को ही अपनी रुचि बना लेना चाहिए। पढ़ाई के अतिरिक्त अभिभावक घरेलू कार्यों में पारंगत होना बेटियों के लिए आवश्यक मानते हैं। अभिभावकों का मानना था कि बेटियों को घरेलू कार्य करने आने चाहिए क्योंकि उसे नौकरी के साथ–साथ इन कामों को भी करना ही पड़ता है।

अभिभावकों की यह सोच भी पक्षपातपूर्ण है। अभिभावकों को अपनी पक्षपातपूर्ण सोच का त्याग करना चाहिए एवं अपनी बेटियों को आगे बढ़ाने में सहयोग, मार्गदर्शन, प्रोत्साहन देना चाहिए। अभिभावकों का दृष्टिकोण, व्यवहार, बेटियों के प्रति सकारात्मक होना चाहिए। बेटियों को भी किसी भी प्रकार से बेटों से कमतर नहीं आंकना चाहिए। बेटियों के साथ विश्वास का रिश्ता अभिभावकों को कायम करना चाहिए।

अध्ययन में पाया गया की बेटियों का अभिभावकों के प्रति एवं अभिभावकों का बेटियों के प्रति दृष्टिकोण एकांकी है। अभिभावक अपनी मान–मर्यादा को केंद्र में रखकर बेटियों के हित के विषय में सोचते हैं। अभिभावकों का मान–सम्मान केवल बेटियों के भरोसे ही क्यों है? बेटियां ही इज्जत बढ़ा और घटा सकती हैं? ऐसा विचार बेटों के विषय में अभिभावकों का क्यों नहीं है? यहां बेटों और बेटियों के प्रति भिन्न दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। इस संदर्भ में समाज को, सरकार को अपने–अपने स्तर पर अभिभावकों की बेटियों के प्रति इस संकीर्ण सोच में सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु प्रयास करना चाहिए। ऐसी ग्रामीण पृष्ठभूमि की बेटियां जब विद्यालय जाती हैं तो वहां शिक्षकों का उत्तरदायित्व भी समाज के प्रति बढ़ जाता है। ऐसी बेटियां स्कूल को अपनी आजादी का प्रतीक मानती है। वहां उनके भरोसे, विश्वास, अपनेपन को कायम रखा जाना चाहिए एवं शिक्षिकाओं को इन बेटियों की सामाजिक स्थिति को जानते–समझते हुए प्रभावी शिक्षण के प्रयास और तीव्रता से करने चाहिए।

### निष्कर्ष

भारतीय पितृसत्तात्मक समाज में बेटियों की स्थिति पराये धन जैसी बनी हुई है। ग्रामीण, पितृसत्तात्मक समाज में बेटियों की यह स्थिति और भी विकट है। बेटियों को अभिभावक अपनी इज्जत से जोड़कर देखते हैं और उनके अच्छे वर मिलने की संभावना बढ़ जाए इसी सोच के साथ अधिकांश अभिभावक अपनी बेटियों की पढ़ाई कराते हैं। बेटियों का विवाह अभिभावक हर हाल में अपनी पसंद के लड़के से करने को सही मानते हैं। अभिभावकों का यह लैंगिक पक्षपात पूर्ण दृष्टिकोण बेटियों की सामाजिक, शैक्षिक भागीदारी के साथ–साथ उनके सषक्तीकरण में भी बाधक है। अतः सभी संबंधित संस्थाओं एवं समाज को इस दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है। दूसरी ओर बेटियों का दृष्टिकोण भी अपने अभिभावकों के प्रति अपेक्षाओं से भरा है। बेटियां अभिभावकों से जो सुविधाएं मिल रही हैं उनसे संतुष्ट है परंतु उनकी सोच में उनके प्रति सकारात्मक बदलाव चाहती है। आपसी भरोसे, विश्वास, लगाव, मित्रता की अपेक्षा अभिभावकों से बेटियां करती हैं। अपने लिए स्वतंत्रता, समानता चाहती हैं और अपने लिए स्वयं निर्णय लेने का विश्वास चाहती हैं। अभिभावकों के दृष्टिकोण का प्रभाव बेटियों की शिक्षा पर भी पड़ता है और बेटियों के अभिभावकों की उनके प्रति सोच उनको कचोटती है। ऐसे में शिक्षण संस्थान, सामाजिक संस्थान, जागरूकता के कार्यक्रम भी आयोजित कर सकते हैं। ऐसे अभिभावकों के बेटियों के प्रति दृष्टिकोण उनकी प्रगति में बाधक सिद्ध हो सकते हैं।

### संदर्भ


1. Census 2011. India. https://www.census2011.co.in
2. Cohen Louis & Manion, Lawrence and Morrison, Keith (2000). Research Methods in Education, Routledge Falmer, London and New York.
3. District Jhajjar, Government of Haryana, https://Jhajjar.nic.in
4. Haryana. https://haryana.gov.in
5. Oommen TK. Social Inclusion in Independent India. Orient Blackwan Private Limited, New Delhi; c2014.